तृतीय खण्ड

(प्रतिदर्श ग्रामों का भूमि उपयोग)

अध्याय-१

अध्याय- ६

प्रतिदर्श ग्रामों का चयन

सतना जिले के भूमि उपयोग का सविस्तार क्षेत्रीय अध्ययन करने हेतु जिले के ९ प्रतिदर्श ग्रामों का चयन किया गया है। ये ग्राम जिले के विभिन्न भागों में स्थित हैं, तथा उस विशिष्ट क्षेत्र के भूमि-उपयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

चयन का आधार :-

जिले के सम्पूर्ण भूमि उपयोग प्रतिरूप को सरल ,सुव्यवस्थित एवं आदानुक्रमिक(Hierarchical) क्रम से प्रस्तुत करने के लिए क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक विभाजन भूगोल की एक मौलिक एवं आधारभूत धारणा है। अत: प्रतिदर्श ग्रामों का चुनाव मुख्यतया उनकी स्थिति, भू-आकृति अथवा मिट्टियों के प्रकार तथा सिंचाई सुविधाओं को ध्यानाकृष्ट रख कर किया गया है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर इन ग्रामों को २ वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है (चित्र क्रमांक ३०.)

(अ) नदी घाटियों एवं मैदानी क्षेत्रों में स्थित ग्राम

(ब) उच्च पठारी क्षेत्रों में स्थित ग्राम

(अ) नदी घाटियों एवं मैदानी क्षेत्रों में स्थित ग्राम :-

इस वर्ग के अन्तर्गत जिले के ५ प्रमुख ग्रामों का चयन किया गया है। ये ग्राम हैं-,रामनियाँ, सढ़वा, माधवगढ़, कृष्णापुर तथा सगौनी ।

(ब) उच्च पठारी क्षेत्रों में स्थित ग्राम :-

केमगवा, बहेलियामाठ (रवीन्द्रनगर) पाण्डेय, तथा कल्ला उर्फ कल्याणपुर ग्राम जिले के ऊँचे पठारी क्षेत्रों तथा पहाड़ी ढालों में स्थित हैं।

यद्यपि सम्पूर्ण जिले में कुल २११६ ग्राम हैं,किन्तु सामान्यतया भूमि उपयोग प्रतिरूप में समरूपता होने के कारण उपर्युक्त प्रतिदर्श ग्रामों का चयन किया गया है। यद्यपि आठे अध्याय में इन प्रतिदर्श ग्रामों के भूमि उपयोग के विभिन्न पहलुओं का सविस्तार अध्ययन किया गया है, तथापि इनसे सम्बद्ध सूचनाओं एवं आकड़ों की संकलन विधि आदि का स्पष्टीकरण यहाँ समाचीन होगा । सर्वप्रथम इन ग्रामों के आधार एवं जनसंख्या की सामान्य जानकारी प्राप्त करने हेतु

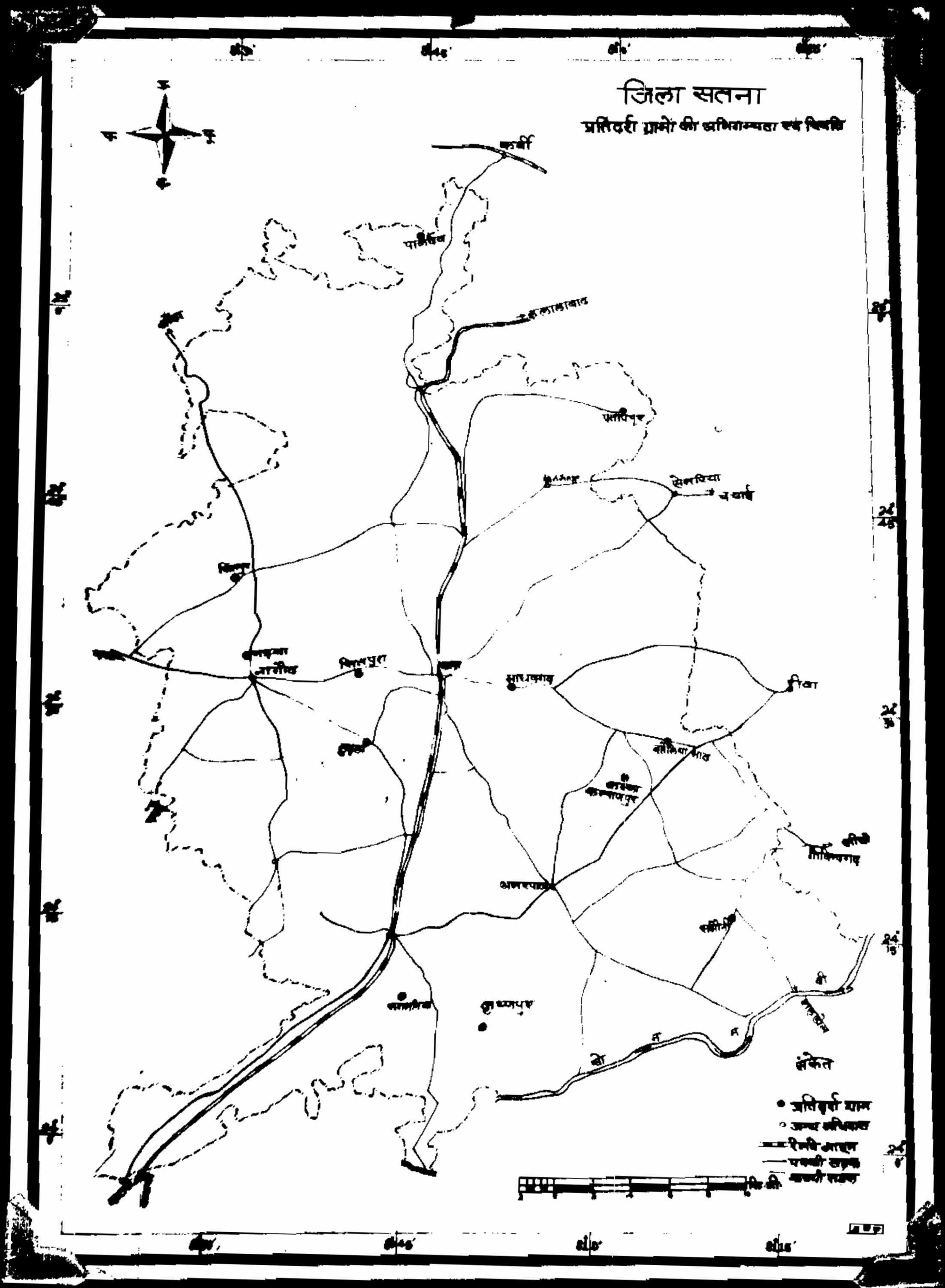
जिला सतना
प्रतिदर्श ग्रामों की अभिगम्यता एवं स्थिति
संकेत
प्रतिदर्श ग्राम
अन्य अधिवास
रेलवे लाइन
पक्की सड़क
कच्ची सड़क

चित्र क्रमांक १३

सेन्सस (census) अभिलेखों का उपयोग किया गया,किन्तु कालान्तर में लेखक द्वारा स्वत: इन ग्रामों का निरीक्षण करने पर जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं ,कार्यात्मक संरचना ,स्त्री-पुरुष अनुपात,जातीय संरचना आदि के सम्बन्ध में यथेष्ट जानकारी प्राप्त हुई। ये सूचनायें सेन्सस रिपोर्ट में उल्लिखित सूचनाओं से प्राय: भिन्न भी थीं ।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण कार्य में एक इन्ची भारतीय सर्वेक्षण मानचित्र (one inch survey of Indian toposheets) तथा जिला मुख्यालय द्वारा प्राप्त भूअभिलेखी मानचित्र भी सर्वथा उपयोगी थे ।इनके द्वारा इन ग्रामों की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त हुई । इन ग्रामों के जलवायु का विवरण समीपस्थ वर्षा मापक केन्द्रों के आधार पर किया गया । मिट्टियों के बारे में जानकारी ग्राम में पहुँचकर प्राप्त की गयी । मृदा-पार्श्विका की विशेषताओं के निर्धारण हेतु कृषकों की मदद से ग्राम में मिट्टी के गड्ढे (pits)खोदे गये, तथा इन मिट्टियों की 'मृदा परीक्षण शालाओं '(नौगाव, एवं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,जबलपुर) में परीक्षण कराया गया। इन परीक्षणों के द्वारा ग्रामीण मिट्टी की भौतिक एवं रासायनिक संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त हुई ।

इन ग्रामों में भूमि का वर्गीकरण उनमें सन्निहित उर्वरता (inherent fertility) तथा उत्पादकता के आधार पर किया गया।इसके पूर्व भूमि की क्षमता (soil capability) एवं उसके उपयोग के आधार पर बैनेट(Bennett) तथा स्टैम्प (L.D.Stamp)महोदयों ने अमेरिका तथा ब्रिटेन में भूमि वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है ।लेखक ने इन ग्रामों के भूमि वर्गीकरण हेतु स्थानीय भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप एवं शस्य पैदावार को आधार माना है। इस सम्बन्ध में ग्राम के लेखपाल तथा कृषकों की मदद से ग्राम में वर्तमान एवं पिछले वर्षों के भूमि उपयोग के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हुई । इस प्रकार भूमि उपयोग प्रतिरूप, शस्य उत्पादन एवं मिट्टियों की संरचना के आधार पर ग्राम की भूमि को चार मुख्य वर्गों में वर्गीकृत किया गया (१)उत्तम किस्म की भूमि (क) सिंचित उत्तम किस्म की भूमि (ख) असिंचित उत्तम किस्म की भूमि

(२) मध्यम किस्म की भूमि (३) निम्न किस्म की भूमि(डाड़ी माड) (४) निकृष्ट भूमि (ऊसर आदि) ।

भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूपों के अध्ययन हेतु प्रत्येक ग्राम के पटवारी मानचित्रों (१६ इन्च = १ मील) को आधार माना गया । प्रत्येक खेत में उगाई गई फसलों के सम्बन्ध में सूचनाएं उपलब्ध की गई । लेखक द्वारा प्रत्येक ग्राम का एक कृषि वर्ष में दो बार (अर्थात् खरीफ मौसम १९७१ तथा रबी मौसम १९७२) निरीक्षण किया गया । खरीफ मौसम में २५ अक्टूबर से ५ नवम्बर सन् १९७१) तथा रबी मौसम में (५ मई से २० मई सन् १९७२)तक निरीक्षण किया गया । स्थानीय सूचनाएं प्राप्त करने हेतु मुख्यतया ऐसा समय निर्धारित किया गया ,जब खरीफ फसलों की कटाई तथा रबी फसलों की बोवाई का कार्य प्रारम्भ रहता है। प्रत्येक ग्राम के क्षेत्रीय अध्ययन हेतु प्राय: दो दिन निर्धारित किये गये थे । पहले दिन पटवारी अभिलेखों द्वारा ग्राम का मान चित्र,भूमि-उपयोग (कृषित एवं गैर कृषित)सिंचित क्षेत्र, विभिन्न फसलों की प्रति हेक्टर पैदावार,फार्म तथा पशु अन्य पदार्थ,जनसंख्या एवं शस्य-प्रतिरूप परिवर्तन आदि के सम्बन्ध में आकड़ों का संकलन किया जाता था; तथा इसके ठीक दूसरे दिन कृषकों एवं पटवारी की मदद से प्रत्येक खेत में पहुंचकर निरीक्षण एवं सर्वेक्षण किया गया । इन ग्रामों के भूमि उपयोग,एवं शस्य प्रतिरूप, तथा कृषकों के संग्रहित सूचनाओं का इससे पूर्व कोई वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया गया ।सूचना प्रदत्त करने वाले विभिन्न वर्ग के लोग थे जिनकी सूचनाएं भी प्राय: भिन्न-भिन्न होती थी। प्रत्येक खेत में उगाई जाने वाली फसलों की सूचनाओं के प्रमुख स्रोत उनके भूमिस्वामी कृषक थे। पटवारी अभिलेखों तथा वृद्ध एवं अनुभवी कृषकों की सूचनाओं के आधार पर भूमि उपयोग एवं शस्य प्रतिरूप परिवर्तन का अध्ययन किया गया ।

लेखक ने जिले के प्रतिदर्श ग्रामों के क्षेत्रीय अध्ययन की अवधि में यह अनुभव किया कि सम्पूर्ण जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप में कोई गम्भीर विषमता-एं नहीं हैं ।कृषकों में रासायनिक उर्वरकों, कृषि की नवीन प्राविधियों एवं वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग के प्रति काफी उत्साह एवं जागरूकता है, किन्तु इनके अधिकांश

खेत छोटे-छोटे तथा बिखरे हुये हैं। सिंचाई के साधनों का अभाव है। फलतः प्रति हेक्टर उपज सामान्यतया कम है।

उपर्युक्त प्रतिदर्श ग्रामों के भूमि उपयोग का सविस्तार अध्ययन किया गया।

स्थिति :-

अक्षांश एवं देशान्तरीय स्थिति, सीमा एवं विस्तार, अभिगम्यता की दृष्टि से स्थिति का मूल्यांकन।

उच्चावच :-

भू-आकृति की दृष्टि से ग्राम का धरातल एवं भौतिक विभाग।

जलवायु :-

तापमान की दशाएं, औसत वार्षिक एवं मासिक वर्षा की मात्रा एवं प्रकृति, मिट्टियां एवं भूमि वर्गीकरण। स्थूल रूप से ग्राम की कुल भूमि को प्रायः उत्तम, मध्यम, निम्न एवं निकृष्ट वर्गों में विभक्त करते हुए, मिट्टियों का अध्ययन किया गया।

इसके साथ ही भूमि उपयोग के अन्य संवर्गों--कुल क्षेत्रफल वन, कृषि के लिए अप्राप्त क्षेत्र, परती रहित अन्य अकृषित क्षेत्र, परती क्षेत्र, निरा फसली, द्विफसली तथा कुल फसली क्षेत्रों का अध्ययन किया गया।

कृषित भूमि-उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन खरीफ एवं रबी फसलों के अन्तर्गत किया गया। ग्रामों में प्रति व्यक्ति भूमि अनुपात के अध्ययन द्वारा जनसंख्या का भूमि पर दबाव तथा प्रति व्यक्ति दैनिक कालोरी आपूर्ति का आकलन किया गया।